अध्याय 13

वही कॉलेज, वही चेहरे

युवराज सुबह नीचे आया तो उसके पिता नाश्ते की मेज पर बैठे फ़ोन पर बात कर रहे थे।

“मैंने जिन तीन लोगों के नाम बताए हैं, केवल उन्हें बुलाओ। मेरे पहुँचने तक वे कार्यालय में होने चाहिए।”

उन्होंने फ़ोन रखा। युवराज सामने की कुर्सी खींचने लगा।

“आज कॉलेज कितने बजे जाओगे?”

“रोज़ के समय पर। क्यों?”

“आरव और उसके मित्रों के साथ सामान्य रहना। तस्वीर की बात मत करना। उनसे कुछ पूछने की भी आवश्यकता नहीं है। कोई अपनी ओर से कुछ कहे तो सुन लेना और आगे बढ़ जाना।”

युवराज ने कुर्सी खींचनी बंद कर दी। “आप आरव को पहले से जानते हैं क्या?”

पिता ने चाय का कप उठाया। कुछ क्षण उसे हाथ में थामे रहे, फिर वापस रख दिया।

“तुम्हें देर हो रही है। जाओ।”

युवराज वहीं खड़ा रहा। कल रात एक गिलास टूटने पर पिता ने उसे पहली बार इस तरह डाँटा था। अब सुबह हो चुकी थी। उनके हाथ स्थिर थे, आवाज़ भी सामान्य थी। फिर भी वे उसे यह बताने तक को तैयार नहीं थे कि तस्वीर में ऐसा क्या देख लिया था।

“ठीक है,” उसने कहा और अपना बैग लेने ऊपर चला गया।

जब वह लौटा, पिता जा चुके थे। चाय का कप मेज पर वैसा ही रखा था।

• • •

कार्यालय में तीनों लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनमें एक वही था जिसने वीर के बचपन की तस्वीर भेजी थी। दूसरा वर्षों से उनके साथ काम कर रहा था। तीसरा उनकी सुरक्षा की व्यवस्था देखता था।

उन्होंने कुर्सी खींचकर बैठते ही चार नाम बताए।

“आरव। वीर। काव्या। ईशा।”

तस्वीर भेजने वाले आदमी ने कहा, “वीर के बारे में तो कल से—”

“बाकी तीनों के बारे में भी सब पता करो। कहाँ बड़े हुए, कॉलेज से पहले कहाँ पढ़े, उनके घर में कौन है। कल तुमने मुझे कॉलेज में दर्ज पता भेजा था। आज मुझे पता करना है कि उस पते पर रहता कौन है।”

“किसका नाम पहले देखें?”

उनके मन में आरव का चेहरा आया। फिर उन्हें तस्वीर में कमीज़ का कोना पकड़े बच्चे की मुट्ठी याद आई।

“चारों का। एक साथ।”

सुरक्षा प्रमुख आगे झुका। “मेरे लिए क्या काम है?”

“अपने भरोसे के अंगरक्षकों को बुलाओ। कुछ लोग कॉलेज के आसपास रहेंगे। बाकी चारों के घरों के पास। मुझे पता होना चाहिए कि उनसे कौन मिलता है और कॉलेज के बाद वे कहाँ जाते हैं।”

“अगर बात करनी पड़ी तो?”

“किसी से बात नहीं करोगे। मेरे बेटे को भी भनक नहीं लगनी चाहिए।”

कुछ क्षण तक कमरे में कोई नहीं बोला। सुरक्षा प्रमुख ने चारों नाम लिख लिए। उसके जाने के लिए उठते ही तस्वीर भेजने वाले ने पूछा, “आपने उस आदमी को पहचान लिया है क्या?”

युवराज के पिता ने उसकी ओर देखा।

“जिससे तस्वीर मिली, उससे पूछो कि उसके पास और क्या है। और जब तक मैं न कहूँ, वह तस्वीर किसी और के पास नहीं जाएगी।”

बैठक समाप्त होते ही कार्यालय की सुबह उलट गई। पहले से तय मुलाकातें आगे खिसका दी गईं। स्वागत कक्ष में ऐसे लोग जमा होने लगे जिन्हें कर्मचारी आम तौर पर वहाँ नहीं देखते थे। एक कर्मचारी हस्ताक्षर के लिए फ़ाइल लेकर आया तो उसे दरवाज़े से ही लौटा दिया गया।

भीतर युवराज के पिता अकेले बैठे थे। उन्होंने फ़ोन पर तस्वीर खोली। चेहरा वही था। बीस साल में किसी का चेहरा कितना बदलता है, यह जानने के लिए उन्हें किसी और की तस्वीर देखने की आवश्यकता नहीं थी। सामने काली पड़ी स्क्रीन में उन्हें अपने ही सफेद बाल दिखाई दे रहे थे।

उन्होंने सुरक्षा प्रमुख को फ़ोन किया।

“कॉलेज पहुँचे?”

“हमारे लोग पहुँच रहे हैं। कोई सूचना मिलते ही—”

पिता ने मेज से गाड़ी की चाबी उठा ली।

“मैं भी आ रहा हूँ।”

• • •

मुख्य द्वार के सामने गाड़ी धीमी हुई तो उन्हें लगा कि वे इस जगह को पहचानने में भूल कर रहे हैं। फाटक बदल चुका था। उसके पास अब एक नया सुरक्षा कक्ष था। फिर उनकी दृष्टि भीतर पुराने बरामदे पर पड़ी। दाईं ओर की तीसरी मेहराब अब भी बाकी दो से संकरी थी।

उसी मेहराब के नीचे खड़े होकर उन्होंने कभी अपनी कक्षा छूटने के बाद मित्रों की प्रतीक्षा की थी।

उन्होंने गाड़ी सड़क के दूसरी ओर रुकवाई।

“मैं भीतर जाऊँ?” चालक ने पूछा।

“यहीं रुको।”

वे शीशे के उस पार देखते रहे। पहली बार उस कॉलेज में आते समय वे भी युवराज की उम्र के थे। उन्हें अपनी पहली कक्षा का कमरा तक मालूम नहीं था। कुछ ही महीनों बाद वहाँ उनका अपना समूह था। कोई कक्षा से पहले बुलाने आता, कोई उनके लिए चाय रख देता। एक का काम बाकी सबकी प्रतीक्षा करवाना था। और एक ऐसा भी था जो सामने से आता दिखाई देता तो उनकी पूरी बात बीच में ही छूट जाती थी।

उन्हें याद आया, वह उस दिन बरामदे की मुंडेर पर बैठी थी। किसी बात पर बाकी सब उससे असहमत थे। उसने उनकी ओर देखकर पूछा था, “और तुम? तुम भी इन्हीं के साथ हो?”

उन्हें याद नहीं था कि प्रश्न किस बात पर उठा था। उन्हें अपना उत्तर याद था।

“पहले तुम बताओ, तुम्हें किसका साथ चाहिए?”

वह हँस पड़ी थी।

उसी बरामदे में बाद में एक और चेहरा दिखाई देने लगा था। वह युवक किस दिन उनके बीच आ बैठा, यह वे कभी ठीक से तय नहीं कर पाए। एक दिन वह साथ चाय पी रहा था। कुछ ही दिनों बाद समूह का कोई भी व्यक्ति उसके बिना अपनी योजना पूरी नहीं मानता था।

और जब उसे पकड़ना उनके लिए सबसे आवश्यक हो गया, तब कोई यह भी नहीं बता सका कि उसे ढूँढना कहाँ से शुरू करें।

सड़क पर एक बस गुज़री। कुछ क्षण के लिए कॉलेज का पूरा फाटक ओझल हो गया। बस हटते ही उन्हें चार विद्यार्थी भीतर से आते दिखाई दिए।

सबसे आगे काव्या थी। उसके हाथ में कुछ कागज़ थे। चलते-चलते उसने उनमें से एक कागज़ पीछे बढ़ाया। वीर ने उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया, मगर हवा से कागज़ मुड़ गया। ईशा ने उसे बीच में पकड़ लिया और वीर से कुछ कहा। तीनों हँस पड़े।

चौथा लड़का उनकी ओर मुड़ा।

पीछे की सीट पर बैठे युवराज के पिता का हाथ दरवाज़े के हत्थे पर जा टिका।

आरव था।

वे तस्वीर में किसी रोशनी या कोण की भूल की संभावना सोचते हुए यहाँ आए थे। अब लड़का उनके सामने था। उसने काव्या के हाथ से बाकी कागज़ लिए, कुछ पढ़ा और सिर उठाकर उसे जवाब दिया। बोलते समय सिर उसी ओर थोड़ा झुका, जिस ओर तस्वीर में झुका हुआ था।

पिता की उँगलियाँ हत्थे पर कस गईं।

बीस वर्ष पहले उस चेहरे की जितनी उम्र थी, आज भी उतनी ही दिख रही थी।

वे गाड़ी से उतर सकते थे। उसके सामने जाकर उसका नाम ले सकते थे। कुछ देर पहले तक वे उसी को अपनी आँखों से देखने के लिए यहाँ आए थे। अब उनका हाथ दरवाज़े से हट गया।

उन्होंने आरव के बगल में खड़े तीनों को फिर देखा। जिस तरह वे चलते-चलते एक-दूसरे के लिए रुक रहे थे, उन्हें अपने पुराने समूह के साथ इसी बरामदे से गुज़रना याद आ गया। एक क्षण के लिए उनकी दृष्टि ईशा पर ठहरी। फिर वीर की ओर चली गई।

कहीं मैं एक को ढूँढते हुए बाकी सब तक तो नहीं आ पहुँचा*?*

उन्होंने आँखों के सामने से बीते वर्षों को हटाने की कोशिश की। अलग-अलग शहरों से आई सूचनाएँ। उन लोगों के फ़ोन, जिन्होंने हर बार किसी को पहचानने का दावा किया था। ऐसे पते जहाँ पहुँचने के बाद मालूम हुआ कि जिस व्यक्ति को वे खोज रहे थे, उसका उस जगह से कभी कोई संबंध ही नहीं रहा।

इतने वर्षों में उनके बाल सफेद हो गए थे। उन्होंने अपने बेटे को बड़ा होते देखा था। और अब उन्हीं लोगों के चेहरे जैसे फिर उसी उम्र में, उसी फाटक के भीतर से चले आ रहे थे।

चालक ने सामने देखते हुए पूछा, “साहब, अब चलें?”

उन्होंने उत्तर देने से पहले एक बार और कॉलेज की ओर देखा। चारों वापस भीतर मुड़ चुके थे। आरव सबसे पीछे था। उसने काव्या के लिए दरवाज़ा थामा और उसके भीतर जाते ही स्वयं भी ओझल हो गया।

“कार्यालय चलो,” उन्होंने कहा।

गाड़ी आगे बढ़ी तो उन्होंने फ़ोन निकाला। सुरक्षा प्रमुख का संदेश आया था कि चारों के घरों के आसपास उनके लोग पहुँचने लगे हैं।

उन्होंने उत्तर लिखा।

मुझे पहले इनके परिवारों के बारे में बताओ। चारों के।

• • •

कॉलेज में युवराज ने दोपहर तक पिता की बात मानी। वीर सामने से आया तो उसने सिर हिलाकर अभिवादन किया। काव्या ने अगले प्रदर्शन की तारीख पूछी तो उसने बता दी। आरव से मुलाकात कक्षा के बाहर हुई। वह दीवार के पास खड़ा बैग में कुछ ढूँढ रहा था।

युवराज सीधे निकल सकता था। फिर उसे तस्वीर में आरव की कमीज़ पकड़े वह बच्चा याद आ गया।

“ओहो, हीरो जी,” उसने कदम धीमे करते हुए कहा। “आज पता चला, आप छोटे बच्चों के साथ भी खूब खेलते हैं।”

आरव ने बैग से अपनी नोटबुक निकाली। “किसने कहा?”

“अरे, बच्चों को तो तुम बड़े अपने से लगते होगे।”

आरव कुछ क्षण उसका चेहरा देखता रहा। “तुम्हें किसी बच्चे को सँभालने के लिए कोई चाहिए क्या?”

युवराज को हँसी आ गई। उसे लगा था आरव के चेहरे पर ज़रा-सी घबराहट तो दिखेगी। आरव उलटे उसका प्रश्न समझने की कोशिश कर रहा था।

“रहने दो,” युवराज ने कहा। “कभी आवश्यकता पड़ी तो तुम्हें ही बुलाऊँगा।”

वह आगे बढ़ गया। तस्वीर की बात जीभ तक आई थी। पिता की सुबह वाली आवाज़ याद आते ही उसने उसे वहीं रोक लिया।

पीछे वीर ने आरव से पूछा, “क्या चाहता था?”

आरव ने नोटबुक बंद की। “पता नहीं। बच्चों के बारे में कुछ कह रहा था।”

“समर से पूछ लेना। इसकी आधी बातें उसे पहले से पता होती हैं।”

आरव ने नोटबुक वीर की ओर बढ़ा दी। “यह काव्या को दे देना। मैं प्रयोगशाला जा रहा हूँ।”

युवराज ने जाते-जाते एक बार पीछे देखा। आरव के लिए बातचीत वहीं समाप्त हो चुकी थी। उसने मुड़कर युवराज की ओर देखा तक नहीं।

• • •

शाम को कॉलेज के बाहर की भीड़ छँट गई। चाय की दुकान पर दो आदमी अब भी बैठे थे। शहर के दूसरे हिस्से में काव्या के घर वाली गली के सामने एक गाड़ी काफी देर से खड़ी थी। पास की दुकान के बुज़ुर्ग ने अपना सामान समेटते हुए उसे दूसरी बार देखा। उन्हें लगा कोई किसी के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा होगा।

कार्यालय में चारों विद्यार्थियों की फ़ाइलें युवराज के पिता के सामने थीं। ऊपर के पन्नों पर वही बातें थीं जो कोई भी कॉलेज से पूछकर जान सकता था। नीचे के पन्नों पर परिवारों से जुड़ी अधूरी सूचनाएँ थीं। हर बार जैसे ही कोई पुराना पता मिलता, तलाश वहाँ रहने वाले किसी नए व्यक्ति पर जाकर रुक जाती।

तभी युवराज का फ़ोन आया।

“पापा, आप कब आएँगे?”

“देर होगी। कॉलेज में सब ठीक रहा?”

“हाँ।”

“आरव से बात हुई?”

“थोड़ा हँसी-मज़ाक किया था।” युवराज कुछ क्षण रुका। “तस्वीर के बारे में कुछ नहीं कहा।”

“उसने कुछ पूछा?”

“यही कि मैं उससे क्या पूछना चाहता हूँ। उसे समझ भी नहीं आया मैं क्या कह रहा था।”

पिता ने आँखें बंद कर लीं। आरव के चेहरे पर कॉलेज के दरवाज़े पर दिखी सहजता अब भी उन्हें याद थी। वह वहाँ ऐसे खड़ा था जैसे उस जगह से उसका संबंध बस कक्षा, मित्रों और अगले प्रदर्शन तक हो।

“कल भी सामान्य रहना,” उन्होंने कहा। “और अगर वह अपनी ओर से तस्वीर की बात उठाए, तो पहले मुझे बताना।”

फ़ोन कट गया।

घर में युवराज ने फ़ोन मेज पर रख दिया। कल तक पिता ने आरव का नाम सुनकर उससे पूछा था कि वह उसे जानता कैसे है। आज वे जानना चाहते थे कि उसने आरव से क्या कहा और आरव ने उत्तर में क्या पूछा।

उसे कैंटीन की वह मेज याद आई जहाँ चारों रोज़ बैठते थे। उनमें से दो खाने पर बहस करते थे। बाकी दो किसी न किसी काम का प्रपत्र लिए बैठे रहते थे। कॉलेज के बाकी विद्यार्थियों की तरह उनकी भी परीक्षा और प्रतियोगिता की तैयारी चल रही थी।

आखिर इन चारों में ऐसा क्या है कि पापा भी परेशान हैं*?*

उधर उसके पिता ने चारों फ़ाइलें बंद कर दीं। कुर्सी से उठने के लिए उन्होंने मेज पर हाथ रखा। उसी मेज के शीशे में उनके सफेद बाल फिर दिखाई दिए।

बीस साल से उन्हें लगता आया था कि जिन लोगों को वे ढूँढ रहे हैं, वे उनसे बचने के लिए कहीं दूर चले गए होंगे।

आज पहली बार उनके मन में आया कि शायद वे ही उन्हें गलत जगह ढूँढते रहे।

अगर ये वही लोग हैं, तो ये चारों फिर उसी कॉलेज में एक साथ क्यों आए हैं*?*